मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण हेतु अंतर्राष्ट्रीय दिवस पर रिपोर्ट - 26 जुलाई 2025

Report on

International Day for the Conservation of the Mangrove Ecosystem - July 26th 2025

Organised by

ICFRE-COASTAL ECOSYSTEM CENTRE

ICFRE-Institute of Forest Biodiversity
Indian Council of Forestry Research and Education
Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Govt. of India
Visakhapatnam – 530 003

Report on Mangrove Awareness and Conservation Programs Conducted on the Occasion of International Day for the Conservation of the Mangrove Ecosystem – 26th July 2025

The ICFRE-Coastal Ecosystem Centre (CEC), Visakhapatnam, organized a series of impactful programs on 26th July 2025 to commemorate the ***International Day for the Conservation of the Mangrove Ecosystem***. These programs were held in collaboration with the ICAR-Central Marine Fisheries Research Institute (CMFRI), Regional Centre, Visakhapatnam, and the Government Women's Degree College, Visakhapatnam, with the primary aim of promoting awareness, knowledge exchange, and active participation in mangrove conservation and restoration activities.

A field-level *Mangrove Awareness and Plantation Programme* was conducted at Bheemili, at the confluence of the Gosthani River. This initiative witnessed the enthusiastic participation of 35 individuals, including members from various organizations, NGOs, fishermen communities, and the local public. During the session, Smt. Gayathri Girsh, Technical Assistant at ICFRE-CEC, delivered an informative talk on the ecological and economic importance of mangroves. Her address focused on the critical role of mangroves in coastal protection, carbon sequestration, fishery resources, and biodiversity conservation. The participants showed keen interest throughout the session and actively engaged in discussions on mangrove benefits and challenges.

Following the awareness session, the participants, along with the staff of ICFRE-CEC, participated in a plantation drive. Mangrove seedlings of key native species such as *Avicennia marina*, *Rhizophora apiculata*, and *Bruguiera gymnorhiza* etc., were planted along the estuarine margins. A total of 50 mangrove saplings were planted during the event, contributing to the ongoing efforts to restore mangrove cover and improve coastal ecosystem resilience in the region.

In conjunction with the field activity, a *National Seminar* was organized at the Government Women's Degree College, Visakhapatnam, titled **"Plant Propagation, Nursery Management, and Disease Diagnosis in Nursery Plants with Special Reference to Mangroves."** This seminar brought together over 300 participants, both offline and online, including students, faculty members, forestry professionals, and environmental enthusiasts.

Dr. Tatiparthi Srinivas, Scientist and Head (In-Charge) of ICFRE-CEC, delivered a series of lectures covering crucial topics such as biodiversity and conservation principles, the ecological significance of mangrove ecosystems, and the need for their conservation in rapidly

urbanizing coastal zones. He provided a detailed overview of the *Standard Operating Procedures (SOPs) for Nursery Techniques*, focusing particularly on mangrove species. His presentations also included insights into propagation techniques, disease diagnosis and management in mangrove nurseries, and practical models for mangrove restoration, especially in urban landscapes where natural regeneration is often hindered.

The participants displayed a deep interest in the topics discussed, and the sessions were highly interactive. Numerous questions were raised on nursery management, species selection, disease control in nursery conditions, and effective restoration techniques. The seminar served as a platform for sharing scientific knowledge and field-level experiences, thereby enhancing the capacity of stakeholders involved in mangrove conservation.

These initiatives by ICFRE-Coastal Ecosystem Centre highlight the Centre's continued commitment to promoting community-based mangrove conservation and strengthening scientific understanding of coastal ecosystems. The combined field and academic approach not only helped sensitize local communities and students about the importance of mangroves but also contributed to knowledge dissemination for improved nursery practices and restoration strategies across the East Coast of India.

अंतर्राष्ट्रीय मैन्ग्रोव पारितंत्र संरक्षण दिवस – 26 जुलाई 2025 के अवसर पर आयोजित मैन्ग्रोव जागरूकता एवं संरक्षण कार्यक्रमों पर प्रतिवेदन

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् – तटीय पारिस्थितिकी तंत्र केन्द्र, विशाखापत्तनम् द्वारा दिनांक 26 जुलाई 2025 को **'अंतर्राष्ट्रीय मैन्ग्रोव पारितंत्र संरक्षण दिवस'** के उपलक्ष्य में विविध प्रभावशाली कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रमों का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् – केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई.), क्षेत्रीय केन्द्र, विशाखापत्तनम् तथा शासकीय महिला स्नातक महाविद्यालय, विशाखापत्तनम् के सहयोग से किया गया। इन कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य मैन्ग्रोव वनों के संरक्षण एवं पुनर्स्थापन की दिशा में जन-जागरूकता, ज्ञान-विनिमय तथा सक्रिय सहभागिता को प्रोत्साहित करना रहा।

मैन्ग्रोव जागरूकता एवं वृक्षारोपण हेतु एक क्षेत्रीय कार्यक्रम का आयोजन भीमिली में गोस्थानी नदी के संगम स्थल पर किया गया। इस पहल में विभिन्न संस्थाओं, स्वयंसेवी संगठनों (एन.जी.ओ.), मछुआरा समुदायों तथा स्थानीय जनसामान्य सहित कुल 35 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कार्यक्रम के दौरान भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् – तटीय पारिस्थितिकी तंत्र केन्द्र, विशाखापत्तनम् में तकनीकी सहायक श्रीमती गायत्री गिरिश द्वारा मैन्ग्रोव वनों के पारिस्थितिकीय एवं आर्थिक महत्त्व पर एक जानकारीपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। उनके वक्तव्य में मैन्ग्रोव वनों की तटीय सुरक्षा, कार्बन अवशोषण, मात्स्यिकी संसाधनों तथा जैव विविधता संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला गया। समस्त प्रतिभागियों ने पूरे सत्र के दौरान गहरी रुचि दिखाई तथा मैन्ग्रोव से संबंधित लाभों एवं चुनौतियों पर सक्रिय रूप से चर्चा में भाग लिया।

जागरूकता सत्र के उपरांत प्रतिभागियों ने भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् – तटीय पारिस्थितिकी तंत्र केन्द्र के कार्मिकों के साथ मिलकर वृक्षारोपण अभियान में सक्रिय भाग लिया। इस अवसर पर एवीसेनिया मरीना (*Avicennia marina*), राइज़ोफोरा एपिकुलेटा (*Rhizophora apiculata*), तथा ब्रुगुएरिया जिम्नोराइज़ा (*Bruguiera gymnorhiza*) जैसे प्रमुख देशज मैन्ग्रोव प्रजातियों के पौधों का नदीमुखीय तटरेखाओं के किनारे रोपण किया गया। कुल 50 मैन्ग्रोव पौधों का रोपण इस कार्यक्रम के दौरान संपन्न हुआ, जिससे इस क्षेत्र में मैन्ग्रोव आच्छादन के पुनर्स्थापन तथा तटीय पारिस्थितिकी तंत्र की स्थायित्वशीलता को सुदृढ़ करने के सतत प्रयासों को बल मिला।

क्षेत्रीय गतिविधि के साथ-साथ, शासकीय महिला स्नातक महाविद्यालय, विशाखापत्तनम् में **"वनस्पति प्रवर्धन, नर्सरी प्रबंधन एवं नर्सरी पौधों में रोगों की पहचान – विशेष संदर्भ में मैन्ग्रोव वनस्पतियाँ"** विषयक एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में विद्यार्थियों, प्राध्यापकों, वानिकी विशेषज्ञों तथा पर्यावरण के प्रति जागरूक जनों सहित 300 से अधिक प्रतिभागियों ने प्रत्यक्ष एवं ऑनलाइन माध्यम से सहभागिता की। यह संगोष्ठी संबंधित विषयों पर ज्ञान के आदान-प्रदान, अनुभव साझा करने तथा मैन्ग्रोव आधारित नर्सरी प्रबंधन को सशक्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मंच सिद्ध हुई।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् – तटीय पारिस्थितिकी तंत्र केन्द्र (ICFRE-CEC), विशाखापत्तनम् के वैज्ञानिक एवं प्रभारी प्रमुख डॉ. ततिपार्थी श्रीनिवास द्वारा विविध व्याख्यानों की एक

श्रृंखला प्रस्तुत की गई, जिनमें जैव विविधता एवं संरक्षण सिद्धांतों, मैन्ग्रोव पारितंत्र की पारिस्थितिकीय महत्ता तथा तीव्र गति से शहरीकरण की ओर अग्रसर तटीय क्षेत्रों में इनके संरक्षण की आवश्यकता जैसे महत्वपूर्ण विषयों को समाहित किया गया। उन्होंने मैन्ग्रोव प्रजातियों हेतु नर्सरी तकनीकों पर मानक संचालन प्रक्रियाओं (Standard Operating Procedures – SOPs) का विस्तृत परिचय प्रस्तुत किया। उनके व्याख्यानों में प्रवर्धन तकनीकों, नर्सरी में रोगों की पहचान एवं प्रबंधन, तथा विशेष रूप से शहरी परिदृश्यों में, जहाँ प्राकृतिक पुनरुत्पत्ति में बाधाएँ आती हैं, वहाँ मैन्ग्रोव पुनर्स्थापन हेतु व्यावहारिक मॉडल्स पर भी सारगर्भित विवरण सम्मिलित था।

प्रतिभागियों ने प्रस्तुत विषयवस्तु में गहन रुचि प्रदर्शित की, तथा समस्त सत्र अत्यंत संवादात्मक एवं सहभागिता-पूर्ण रहे। नर्सरी प्रबंधन, प्रजाति चयन, नर्सरी परिस्थितियों में रोग नियंत्रण तथा प्रभावी पुनर्स्थापन तकनीकों से संबंधित अनेक प्रश्न प्रतिभागियों द्वारा उठाए गए। यह संगोष्ठी मैन्ग्रोव संरक्षण से संबंधित हितधारकों की क्षमता संवर्धन की दिशा में एक सशक्त मंच सिद्ध हुई, जहाँ वैज्ञानिक ज्ञान तथा क्षेत्रीय अनुभवों का आदान-प्रदान सुचारु रूप से संपन्न हुआ।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् – तटीय पारिस्थितिकी तंत्र केन्द्र द्वारा किए गए ये प्रयास केन्द्र की समुदाय-आधारित मैन्ग्रोव संरक्षण को प्रोत्साहित करने एवं तटीय पारिस्थितिकीय तंत्रों की वैज्ञानिक समझ को सुदृढ़ करने के प्रति सतत प्रतिबद्धता को उजागर करते हैं। क्षेत्रीय एवं शैक्षणिक गतिविधियों के समन्वित दृष्टिकोण ने न केवल स्थानीय समुदायों एवं विद्यार्थियों में मैन्ग्रोव वनों के महत्व के प्रति संवेदनशीलता उत्पन्न की, अपितु पूर्वी तट पर उन्नत नर्सरी अभ्यासों एवं प्रभावी पुनर्स्थापन रणनीतियों के लिए ज्ञान प्रसार में भी उल्लेखनीय योगदान दिया।

Glimpses of International Day for the Conservation for the Mangroves 2025

मैन्ग्रोव संरक्षण दिवस की झलकियाँ

Latitude: 17.90395
Longitude: 83.452145
Elevation: 29.23±14.0 m
Accuracy: 3.79 m
Time: 07-26-2025 07:42
Note: Mangrove Day

Latitude: 17.903578
Longitude: 83.45235
Elevation: 33.83±20.7 m
Accuracy: 3.79 m
Time: 07-26-2025 08:04
Note: Mangrove Day

NATIONAL WORKSHOP

ON

"PLANT PROPAGATION NURSERY MANAGEMENT AND DISEASE DIAGNOSIS I
NURSERY PLANTS WITH SPECIAL REFERENCE TO MANGROVES"

26th July 2025

The Eve of International Day for the Conservation of the Mangrove Ecosyst

In Collaboration with

ICFRE-Coastal Ecosystem Centre (CEC)
Institute of Forest Biodiversity
Ministry of Environment, Forest and Climate, Visakhapatnam.

Organized by

Department of Botany

VISAKHA GOVT. DEGREE COLLEGE FOR WOMEN

(AUTONOMOUS)

Re-accredited by NAAC A+ Grade 3.28 CGPA 29-10-1/3, Suryabagh, Old Jail Road, Visakhapatnam

NATIONAL WORKSHOP
26th July 2025

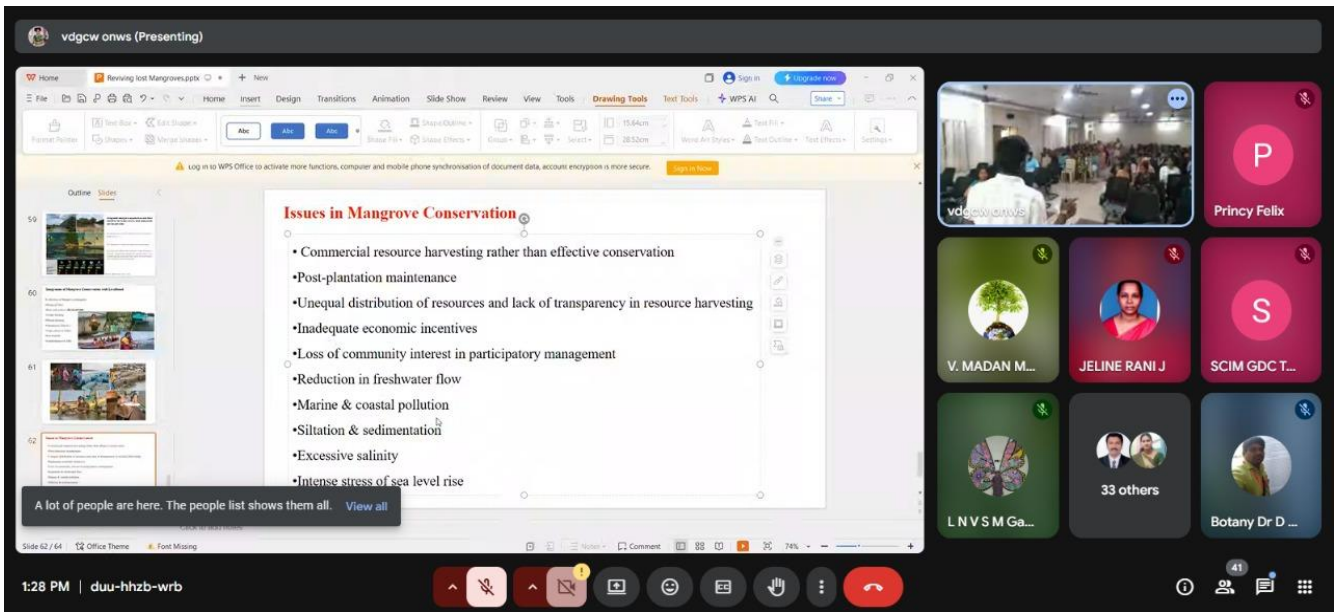

vdgcw onws (Presenting)
Issues in Mangrove Conservation
• Commercial resource harvesting rather than effective conservation
•Post-plantation maintenance
•Unequal distribution of resources and lack of transparency in resource harvesting
•Inadequate economic incentives
•Loss of community interest in participatory management
•Reduction in freshwater flow
•Marine & coastal pollution
•Siltation & sedimentation
•Excessive salinity
•Intense stress of sea level rise
A lot of people are here. The people list shows them all. View all
Princy Felix
V. MADAN M...
JELINE RANI J
SCIM GDC T...
L N V S M Ga...
33 others
Botany Dr D ...
1:28 PM | duu-hhzb-wrb

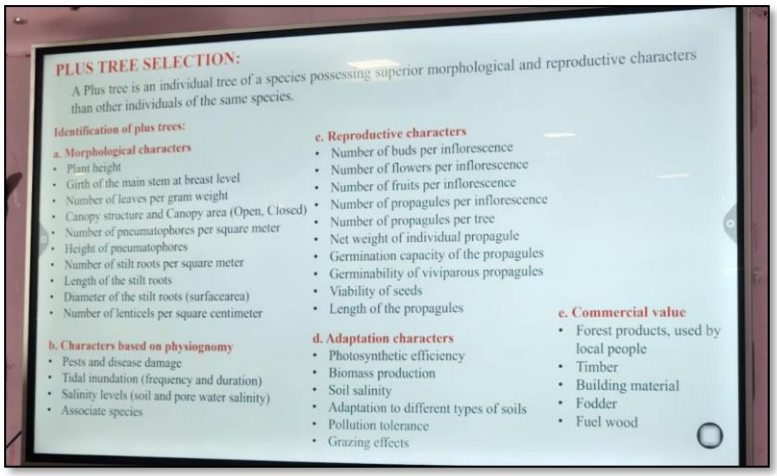

ABN ఆంధ్రజ్యోతి

మడ అడవుల ప్రాధాన్యంపై అవగాహన

అతిథి శ్రీనివాస్‌తో ప్రిన్సిపాల్ మంజుల, అధ్యాపకులు

విశాఖపట్నం, జూలై 26 (ఆంధ్రజ్యోతి): విశాఖ ప్రభుత్వ మహిళా కళాశాలలో శనివారం అంతర్జాతీయ మడ అడవుల పర్యావరణ పరిరక్షణ వ్యవస్థాపక దినోత్సవం నిర్వహించారు. కోస్టల్ ఎకోసిస్టమ్ సెంటర్‌తో సంయుక్తంగా నిర్వహించిన ఈ కార్యక్రమానికి ఏసీఏఫ్ఆర్ఈ ఇన్‌చార్జి డాక్టర్ టి.శ్రీనివాస్ ముఖ్య అతిథిగా హాజరై మడ అడవుల ప్రాముఖ్యత, స్థిరమైన నిర్వహణ, పర్యావరణ పరిరక్షణకు సంబంధించిన వివిధ అంశాలపై విద్యార్థులకు అవగాహన కల్పించారు. ప్రిన్సిపాల్ డాక్టర్ ఆర్.మంజుల మాట్లాడుతూ తీరప్రాంత రక్షణ, జీవ వైవిధ్యంతోపాటు వాతావరణ నియంత్రణలో మడ అడవులు కీలక పాత్ర పోషిస్తాయని పేర్కొన్నారు. అనంతరం బోటనీ విభాగాధిపతి డాక్టర్ టి.ఎం.ఎ.నివేదిత మాంగ్రూవ్ మొక్కలను ప్రదర్శించి వాటి ప్రత్యుత్పత్తి విధానాన్ని వివరించారు. ఈ కార్యక్రమంలో వృక్షశాస్త్ర విభాగం డాక్టర్ కె.లావణ్య, అరుణపద్మ, డాక్టర్ పి.ఎల్.శరణ్య, అధ్యాపకులు, అధ్యాపకేతర సిబ్బంది, విద్యార్థినులు పాల్గొన్నారు.

27/07/2025 | Visakhapatnam District | Page : 8
Source : https://epaper.andhrajyothy.com